शक्ति अनुसंधान केन्द्र

—: गणपति, लक्ष्मी एवं सरस्वती के संयुक्त यंत्र की पूजन विधि :—

जब भी कोई व्यक्ति मेरे पास अपनी समस्यायें लेकर आता है, तो सामान्यतः मैं उसे गणपति, महालक्ष्मी एवं सरस्वती का मंत्र प्रदान करता हूँ और अपने हाथ से बना हुआ इन तीनों महाशक्तियों का एक यंत्र प्रदान करता हूँ, जिसे महागणपति, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती (वीणापाणि) का संयुक्त यंत्र कहा जाता है। आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है, बुद्धि एवं विवेक की कमी, सच्चे दिग्दर्शक की कमी, आर्थिक संकट एवं ज्ञान तथा विद्या की कमी। यह यंत्र तीनों समस्याओं का एक साथ समाधान करता है। यहाँ मैं इस यंत्र की पूजन विधि, ध्यान मंत्र एवं स्तुति मंत्र इत्यादि लिख रहा हूँ। यह मेरी सबसे प्रिय साधना है।

यंत्र →

<table>
<tr><td colspan="2">महालक्ष्म्यै</td><td>×</td><td>नमः</td></tr>
<tr><td colspan="2">9</td><td>श्रीं</td><td>6</td></tr>
<tr><td rowspan="2">ॐ</td><td>1</td><td>4</td><td rowspan="2">ह्रीं</td></tr>
<tr><td>7</td><td>8</td></tr>
<tr><td colspan="2">3</td><td>क्लीं</td><td>2</td></tr>
</table>

सर्वप्रथम अपने हाथ में एक या तीन पुष्प एवं अक्षत तथा दुर्वा लेकर तीनों महाशक्तियों का ध्यान करें। (संभव हो तो गणेश के लिए लाल फूल, महालक्ष्मी के लिए पीला फूल तथा सरस्वती के लिए उजला फूल उत्तम है।) गुलाब का लाल फूल सभी देवताओं के लिए उत्तम है।

—: गणेश ध्यान :—

ॐ खर्व स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं, प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोल गण्डस्थलम्।
दन्ताघात विदारितारि रूधिरैः सिन्दूरशोभाकरं, वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।

—: श्री गणेश प्रार्थना :—

ॐ देवेन्द्र मौलिमन्दार मकरन्दकणारुणाः। विघ्नं हरन्तु हेरम्बचरणाम्बुजरेणवः।

—: श्री गणेश प्रणाम :—

ॐ एकदन्त महाकाय लम्बोदरं गजाननम्। विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।।

—: गणपति विघ्नहरण द्वादश नाम तथा प्रार्थना :—

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेर्तुगणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

—: श्री महालक्ष्मी ध्यान :—

ॐ पाशाक्षमालिकाम्भोज श्रृणिभिर्याम्य सौम्ययोः। पद्मासनस्थां ध्यायेच्च श्रियं त्रैलोक्यमातरम्।।
गौरवर्णां सुरूपां च सर्वालंकार भूषिताम्। रौक्मपद्मव्यग्रकरां वरदां दक्षिणेण तु।।

—: श्री लक्ष्मी प्रणाम :—

ॐ विश्वरूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे। सर्वतः पाहि मां देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:— हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 7808460802, 9852208378, 8271854133, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

—: श्री लक्ष्मी स्तुति :—

ॐ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

—: श्री सरस्वती ध्यान :—

(1)

ॐ तरूणशकलमिन्दोर्बिभ्रति शुभ्रकान्तिः, कुचभरणमितांगी सन्निषण्णा सिताब्जे।
निजकरकमलोद्यल्लेखनी पुस्तक श्रीः, सकल विभवद्धियै पातु वाग्देवता नः।।

(2)

ॐ वाणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां, चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकां निजकरैः सम्बिभ्रतिमादरात्।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढयकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैर्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये।।

—: श्री सरस्वती प्रणाम :—

ॐ भद्रकाल्यै नमो नित्यं सरस्वत्यै नमो नमः। वेदवेदांगवेदान्त विद्यास्थानेभ्य एव च।
जय जय देवि चराचरसारे कुचयुगशोभितमुक्ताहारे, वीणा पुस्तक रञ्जित हस्ते भगवति भारति देवि नमस्ते ।।

अब तीनों महाशक्तियों का पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। गणेश पूजन का मंत्र लिख रहा हूँ, उसी प्रकार महालक्ष्मी एवं सरस्वती का पूजन करें।

1. (i) ॐ गं गणपतये नमः गन्धं समर्पयामि। (गंध में चंदन, रोली, एवं सिन्दूर इत्यादि आता है।)
   (ii) ॐ गं गणपतये नमः सिन्दूरं समर्पयामि।
   (iii) ॐ गं गणपतये नमः अक्षतान् समर्पयामि।
2. (i) ॐ गं गणपतये नमः पुष्पं समर्पयामि।
   (ii) ॐ गं गणपतये नमः दुर्वाकुरान समर्पयामि।
   (iii) ॐ गं गणपतये नमः विल्वपत्रं/विल्वपत्राणि समर्पयामि।
3. ॐ गं गणपतये नमः धूपं आघ्रापयामि।
4. ॐ गं गणपतये नमः दीपं दर्शयामि।
5. (i) ॐ गं गणपतये नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
   (ii) ॐ गं गणपतये नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

इसी प्रकार भगवती महालक्ष्मी के लिए ॐ महालक्ष्म्यै नमः गंधं समर्पयामि तथा माता सरस्वती के लिए ॐ सरस्वत्यै नमः गंधं समर्पयामि इत्यादि कहना चाहिए।
ध्यान दें— गणेश, लक्ष्मी एवं सरस्वती की पूजा में तुलसी पत्र का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
नैवेद्य में गणेश को लड्डु एवं लक्ष्मी तथा सरस्वती को दूध से बने मिठाई जैसे पेड़ा या बर्फी ज्यादा पसंद है। जो भी समर्थ हों, उसे अवश्य चढ़ायें।

पूजनोपरांत संभव हो, तो स्तुति, स्तोत्र या चालीसा इत्यादि का पाठ करें। स्तोत्र वगैरह के पाठ के बाद एक बार तीनों देवताओं का मानसोपचार पूजन करें। इस पूजन में कुछ वास्तविक सामग्री अर्पित नहीं की जाती, बल्कि आंखें बंद कर मंत्र बोलते हुए केवल कल्पना की जाती है कि मैं ये ब्रह्माण्डीय वस्तु अपने इष्ट को समर्पण कर रहा हूँ।

1. ॐ लं पृथ्वीयात्मकं गंधं समर्पयामि श्री गणेशाय नमः।
2. ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि श्री गणेशाय नमः।
3. ॐ वं वाय्वयात्मकं धुपं आघ्रापयामि श्री गणेशाय नमः।
4. ॐ रं वहन्यात्मकं दीपं दर्शयामि श्री गणेशाय नमः।
5. ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि श्री गणेशाय नमः।
6. ॐ सं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि श्री गणेशाय नमः।

श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:— हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 7808460802, 9852208378, 8271854133, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

इसी प्रकार से भगवती महालक्ष्मी तथा माता सरस्वती का करना चाहिए।

–: श्री विघ्न विनाशक गणपति स्तोत्रम् :–

ॐ परं धाम परं ब्रह्म परेशं परमीश्वरम्। विघ्ननिघ्नकरं शान्तं पुष्टं कान्तमनन्तकम्।।
सुरासुरेन्द्रैः सिद्धेन्द्रैः स्तुतं स्तौमि परात्परम्। सुरपद्मादिनेशं च गणेशं मंगलायनम्।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं विघ्नशोकहरं परम्। यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वविघ्नात् प्रमुच्यते।।

–: लक्ष्मीदाता श्री गणपति स्तोत्रम् :–

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्यप्रदायिने। दुष्टारिष्टविनाशाय पराय परमात्मने।।
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोपशोभितम्। अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूहविनाशनम्।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः। सर्वसिद्धिप्रदोऽसि त्वं सिद्धिबुद्धिप्रदो भव।।
चिन्तितार्थप्रदस्त्वं हि सततं मोदकप्रियः। सिन्दूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः।।
इदं गणपतिस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः। तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्।।

ॐ त्रैलोक्यपूजितेदेवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भवमयिस्थिरा कमला चंचला लक्ष्मीश्चलाभूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः पद्मधारिणी द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मी समपूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेतस्य पुत्रदारादिभिः सह।।

।। दण्डक अनंगशेखर छन्दम्।।

ॐ उमेश्वरेउमामयी, रमेश्वरेरमामयी, गिरीश्वरे प्रभामयी, क्षमामयी क्षमावताम्।
सुधाकरे सुधामयी, चराचरे विधामयी, क्रियासुसंविधामयी, स्वधामयीस्वधावताम्।।
जगत्सु चेतनामयी, मनसुः वासनामयी, कवीन्द्रभावनामयी, प्रभामयी प्रभावताम्।
धनेषु चंचलामयी, कलावतां कलामयीं, शरीरिणामिलामयी, शिलामयी सदावताम्।।

।। श्री सरस्वती स्तोत्रम्।।

ॐ श्वेतपद्मासना देवी श्वेतपुष्पोपशोभिता। श्वेताम्बरधरा नित्या श्वेतगन्धानुलेपना।।
श्वेताक्षसूत्रहस्ता च श्वेतचन्दनचर्चिता। श्वेतवीणाधरा शुभ्रा श्वेतालंकारभूषिता।।
वन्दिता सिद्धगन्धर्वैरर्चिता सुरदानवैः। पूजिता मुनिभिः सवैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा।।
स्तोत्रेणानेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्। ये स्मरन्ति त्रिसन्ध्यायां सर्वां विद्यां लभन्ते ते।।

तत्पश्चात् इन तीनों मंत्रों का क्रम से एक–एक माला, अथवा तीन–तीन माला या पाँच–पाँच माला जप करें। जप के पूर्व माला को हाथ में लेकर इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए। देवताओं की पूजा के बाद माला को भी जल, रोली, चंदन, सिंदूर, अक्षत, पुष्प एवं धुप इत्यादि से पूजा कर लेनी चाहिए। माला के प्रार्थना से पूर्व मुख शुद्धि के लिए 10 या 21 बार ॐ का जप कर लेना चाहिए।

माला प्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ॐ अविघ्नं कुरू माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।
ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।।

1. ॐ गं गणपतये नमः।। (गणपति मंत्र)
2. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।। (महालक्ष्मी मंत्र)
3. ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः।। (सरस्वती मंत्र)

श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 7808460802, 9852208378, 8271854133, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

जप के पश्चात् माला सिर से लगायें तथा जप निवेदन करें।
इस मंत्र से माला को सिर से लगायें–

ॐ त्वं माले! सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव। शिवं कुरूष्व मे भ्रदे यशो वीर्यञ्च देहि मे।

यह बोलकर नीचे लिखा मंत्र हाथ में जल लेकर पढ़ें तथा जप को ईश्वर को अर्पण करने के लिए जल देवताओं के सामने छोड़ दें।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता/गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव/देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वर/ त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।
ॐ अनेन यथासंख्यकजपाख्येन कर्मणा श्री गणेश देवः, महालक्ष्मी देवी च सरस्वती देवी प्रीयताम् न मम्।

समय हो तो निर्देशानुसार कवच का पाठ करें। इस यंत्र की साधना में जप के पश्चात् स्तुति का विशेष महत्व है। अतः एक बार अवश्य पढ़ें।

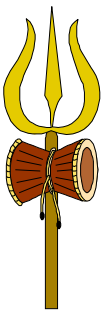

।। श्री गणेश स्तुति।।
ॐ गणेश प्रथमाधीशं निर्गुणं सगुणं शिवम्। योगिनो यत् पदं यान्ति, गौरी नन्दनं भजेत्।।

।। श्री लक्ष्मी स्तुति।।
ॐ पद्मासन स्थिते देवि पर ब्रह्मस्वरूपिणि। परमेशि जगन्तमातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।

।। श्री सरस्वती स्तुति।।
ॐ नमस्ते शारदे देवी सरस्वतीद मति प्रदे। वसतु त्वं मम जिह्वाग्रे सर्व विद्याप्रदां भव।।

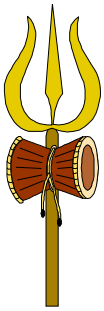

जप के बाद संभव हो, तो जप का दशांश हवन अवश्य करें। अगर प्रतिदिन संभव न हो, तो सप्ताह में एक बार बुधवार अथवा शुक्रवार के दिन करें। अगर यह भी संभव न हो, तो महीने में एक बार चतुर्थी, पंचमी अथवा पूर्णिमा को जरूर करना चाहिए। हवन की विधि मैंने अलग से लिखी है। उसे देखें।

जप या हवन के पश्चात् इन देवताओं के गायत्री मंत्र से एक–एक आचमनी जल द्वारा तर्पण कर देना चाहिए।

श्री गणेश गायत्री – ॐ एकदंताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ति प्रचोदयात्।।

श्री लक्ष्मी गायत्री – ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, विष्णुपत्नयै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।।

श्री सरस्वती गायत्री – ॐ सरस्वत्यै च विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै च धीमहि। तन्नो वाणी प्रचोदयात्।।

विशेष – किसी भी उच्च कोटि की महाविद्या या अन्य साधना को संपन्न करने से पहले अगर तीनों मंत्रों की एक–एक माला जप कर ली जाए, तो साधना में सभी प्रकार से रक्षा होती है। साथ ही सफलता भी शीघ्र प्राप्त होती है। द्रष्टव्य है कि इन मंत्रों को कोई भी साइड इफेक्ट नहीं है। इन तीनों मंत्रों की साधना करने से ये महाशक्तियाँ परम कृपालु होकर साधक को सभी प्रकार का वर देती हैं, एवं गुरू जैसी कृपा करती हैं। संसार की समस्त सुख–सामग्री साधक के चरणों में मौजूद होती हैं।

देव दीपावली

हम सब कार्तिक अमावस्या को जो दीपावली मनाते हैं, वह मनुष्यों के लिए है। इस दिन अपने घरों में हम दीप जलाकर माता लक्ष्मी का आवाहन करते हैं। इस रात माता लक्ष्मी की पूजा श्री गणेश के साथ होती है, क्योंकि जगत के स्वामी भगवान श्री हरि विष्णु योगनिद्रा में लीन रहते हैं। लेकिन कार्तिक पूर्णिमा की संध्या को जो दीपावली मनाई जाती है, उसे देव दीपावली कहते हैं। इस दिन पवित्र नदियों में दीप प्रज्वलित कर बहते जल में प्रवाहित किया जाता है। यह दीपावली देवताओं के प्रिय हेतु मनाया जाता है। देवोत्थान एकादशी के दिन भगवान श्री हरि विष्णु योगनिद्रा से उठ जाते हैं। इस दिन माता लक्ष्मी की पूजा उनके स्वामी श्री हरि के साथ होती है।
इस दिन आप सभी भी समीप के किसी पवित्र नदियों में या तालाब में दीप जलाकर देव दीपावली मना सकते हैं। अगर यह भी संभव नही हो, तो अपने घर के आंगन या छत पर भी एक बड़े थाल में जल भरकर उसमें माता गंगा समेत सातों पवित्र नदियों का इस मंत्र से आवाहन कर पूजन करें और माता लक्ष्मी का ध्यान कर, उनका मंत्र पढ़कर दीप प्रज्वलित करें। दीप का पूजन कर महालक्ष्मी मंत्र कहते हुए इसे जल में प्रवाहित करें। एक, पांच, सात, ग्यारह, या इक्कीस की संख्या में अथवा 108 या 1000 या 1008 की संख्या में प्रवाहित करें। विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें।
सप्त नदी आवाहन मंत्र– ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू।।

श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 7808460802, 9852208378, 8271854133, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com